

प्रथम अध्याय

## मुद्राराक्षस और उनकी रचनाएँ

---

# प्रथम अध्याय

## मुद्राराक्षस और उनकी रचनाएँ

---

### 1.1 मुद्राराक्षस का जीवन :

मनुष्य के जीवन में घटने वाली घटनाएँ उस पर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं एवं उसके व्यक्तित्व को बनाने एवं बिगाड़ने में जीवन में घटने वाली इन घटनाओं की महत्ती भूमिका होती है। 'सुभाषचंद्र आर्य' को 'मुद्राराक्षस' बनाने वाली घटनाओं ने मुद्राराक्षस के विशिष्ट व्यक्तित्व को संवारने में विशेष भूमिका निभाई है। मुद्राराक्षस के व्यक्तित्व को निर्मित करने वाली घटनाओं पर विस्तार से चर्चा करने से पूर्व उनके व्यक्तित्व का एक अंश उनके नाटक 'आला अफसर' के संवाद के माध्यम से व्यक्त करना प्रासंगिक होगा

“सभी : गाइए गणपति जय वंदन

जिनके कान न सुनते क्रंदन

गाइए गणपति जय वंदन ।

हर सवाल का सदा एक हल

नारे घिसो लगाओ चन्दन

गाइए गणपति जय वंदन ।

घुटता देश गंधाता शासन

बहुत हुआ अब जागो जन मन

गाइए गणपति जय वंदन ।

रंगा : ( सामने आकर ) हाँ तो अपने मेहरबान कद्रदान लोगों के सामने

आज हम एक ऐसा खेल दिखाने जा रहे हैं जो खेल कम है ,सच्चाई ज्यादा है। क्या है ?

कोरस : सच्चाई ! ”<sup>1</sup>

ये संवाद मुद्राराक्षस के सम्पूर्ण व्यक्तित्व (सांसारिक एवं साहित्यिक) को झलकाते हैं कि उन्होंने अपने साहित्य में कल्पना से अधिक युगीन परिस्थितियों एवं जीवनानुभवों को एक धागे में पिरोकर साहित्यिक विधाओं एवं स्वयं के व्यक्तित्व का सृजन किया है।

मुद्राराक्षस का जन्म 21 जून, 1933 में लखनऊ के पास बेहटा गाँव में हुआ। उनका वास्तविक नाम ‘सुभाषचंद्र आर्य/ सुभाषचंद्र गुप्ता’ था। उनके पिता का नाम शिवचरण लाल था जो राजनीतिक संदर्भ में काफी कट्टरपंथी थे और सुभाषचंद्र नाम ‘सुभाषचंद्र बोस’ के आदर स्वरूप दिया था। अब प्रश्न उठता है कि फिर सुभाषचंद्र गुप्ता नाम कैसे छद्म हो गया और मुद्राराक्षस कैसे इनका वास्तविक नाम बन गया? सुभाषचंद्र आर्य ने जिस समय हिंदी जगत में अपना पैर जमाया वह दौर सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन ‘अज्ञेय’ का था, जो ‘तार सप्तक’ के संपादक के रूप में जाने जाते थे।

‘अज्ञेय’ के ‘तार सप्तक’ को पढ़कर सुभाषचंद्र ने एक आलोचनात्मक लेख लिखा जिसमें यह साबित किया गया कि अज्ञेय पर विदेशी लेखकों की गहरी छाप है। प्रयोगवाद पर लिखे गए इस लेख में उन्होंने यह साबित करने का प्रयास किया कि इसमें अमेरिका के अंग्रेजी कवि टी.एस.इलियट और लारेंस का प्रभाव है। गोकि सुभाषचंद्र अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता थे तो उन्होंने अपने सभी तथ्यों की पुष्टि उदाहरण सहित प्रस्तुत की जिसे ‘युगचेतना’ के संपादक डॉ. देवराज भी झुठला नहीं सके। यह लेख उन्होंने छापने के लिए डॉ. देवराज को दे दिया। पता नहीं डॉ. साहब की सुभाषचंद्र नाम के अतिरिक्त किसी अन्य नाम से इस लेख को छापने में क्या मजबूरी रही होगी और सुभाषचंद्र की सहमति से यह लेख मुद्राराक्षस के नाम से छपा गया एवं इस लेख ने सुभाषचंद्र को मुद्राराक्षस नाम देने के साथ-साथ काफी ख्याति भी दी। मुद्राराक्षस नाम देखकर सबको लगा कि यह लेख किसी प्रौढ़ लेखक के द्वारा लिखा गया है। उस समय किसी को संज्ञान

भी न था कि इस लेख को लिखने वाला लेखक मात्र 19 साल का युवा लेखक है। “मेरा नाम जिस तरह का था, उसके कारण एक भ्रम भी बड़े पैमाने पर फैल रहा था। जिन्होंने मुझे देखा नहीं था वे मुझे एक खासा बुजुर्ग आदमी समझते थे। बल्कि इलाचंद्र जोशी इस बात पर खासे नाराज़ भी हुए थे। वे अपने पत्रों में मुझे ‘आदरणीय’ सम्बोधित करते रहे थे। कुछ अर्से बाद जब मेरा उनसे साक्षात हुआ तो वे बहुत नाराज़ हुए बोले, मैं तुम्हें आदरणीय लिखता रहा और तुमने उत्तर में यह नहीं बताया कि तुम्हारी उम्र इतनी कम है।”<sup>2</sup> इस लेख में उन्होंने काफी नई बातों का उल्लेख किया जिसे पढ़कर साहित्यकारों के बीच हलचल मच गई। सुभाषचंद्र गुप्ता से मुद्राराक्षस बनने के इस सफ़र से यह अंदाज़ तो अवश्य लगाया जा सकता है कि 19 साल का यह युवा सहित्य को अपने विवेक एवं ज्ञान से एक नई दिशा देने वाला था।

मुद्राराक्षस को मुद्राराक्षस बनाने में एक सहयोग उनकी पत्नी ‘इंदिरा’ जी का भी है। उन्हें प्रत्येक काम में अपनी पत्नी का साथ एवं प्रोत्साहन मिला चाहे वह किसी नाटक में अभिनय करना हो (संतोला नामक नाटक में मुख्य भूमिका निभाई) या मुद्रा जी द्वारा किए गए आंदोलनों में भाग लेना हो। इंदिरा जी ने मुद्राराक्षस के अनेक नाटकों में अभिनय किया है। मुद्राराक्षस की तीन संतानें हैं। एक बेटी एवं दो बेटे। बेटी शीराजी को बचपन में ही कुछ महीने बाद डायरिया होने के कारण उसे बचा नहीं पाये। इस बात का मुद्राजी को दुःख से ज्यादा आजीवन भर आक्रोश रहा। आक्रोश का कारण शायद यह रहा होगा कि वह अपनी पहली संतान को बचा नहीं पाये। लेकिन जल्द ही उन्हें दो पुत्र हुए-रोमी और रोमेल। रोमी अखबारों में लेख लिखते हैं और ‘प्रतिवाद’ नामक पत्रिका का संपादन करते हैं। छोटे बेटे रोमेल दिल्ली में राष्ट्रीय स्तर की विज्ञापन एजेंसी में निदेशक एवं नेशनल क्रिएटिव डायरेक्टर हैं। मुद्राराक्षस को हर जगह (चाहे वह साहित्यिक दुनिया हो या व्यवसायिक क्षेत्र) अपने परिवार का सम्पूर्ण सहयोग मिला।

अपने समय का प्रत्येक लेखक अपनी समकालीन परिस्थितियों को अपने साहित्य में उतारता है। फिर क्या कारण है कि प्रत्येक लेखक दूसरे से भिन्न हो जाता है एवं अपने साहित्य से

समाज को एक नई दृष्टि देता है। वह है उसका दृष्टिकोण परिस्थितियों को समझने का विवेक। लेकिन एक दृष्टिकोण या नज़रिया तय करते वक़्त किसी भी साहित्यकार को सच्चाई से मुँह नहीं फेरना चाहिए और मुद्राराक्षस ऐसे ही साहित्यकार थे जो ना तो अपने विचारों को किसी पर थोपते थे ना ही सच्चाई से आँख मूँद लेते थे। उनका तर्क, विवेक, चिंतन व विज्ञानबोध ही उन्हें अन्य लेखकों से भिन्न करता है। उन्हीं के शब्दों में, “मैं क्या करता? दलित रचनाकार प्रेमचंद और निराला को लेकर अपनी आपत्तियां पहले भी दर्ज कराते रहे हैं और सवर्ण लेखकों द्वारा इसके लिए उनकी निंदाएं भी की जाती रहीं है। प्रेमचंद ने दलितों पर कितनी ‘अनुकम्पा’ की है, जरूरत से कुछ ज्यादा तो नहीं कर दी है, यह एक अलग विषय है लेकिन सवर्ण लेखकों द्वारा उनके ‘निंदक’ दलितों की निंदा की ध्वनि कुछ ऐसी थी जैसे दलित लेखक प्रेमचंद को खारिज करके कोई बहुत बड़ा देश व समाजविरोधी अपराध कर रहे हो। सवर्ण लेखक विचारों के बजाय अनुदार टिप्पणियों में ज्यादा मुखर थे और प्रेमचंद को तर्क से परे आस्था का विषय बना रहे थे, जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता था। क्योंकि वहां जो मानसिकता काम कर रही थी, वह यह थी सवर्ण करें तो करें, दलितों की क्या मजाल कि वे प्रेमचंद की आलोचना करें। मैं कहता हूँ कि यह हिंदी-हिन्दू असभ्यता की जड़ों में समायी हुई असहिष्णुता है, जो किसी भी विरोधी स्वर को स्वीकार नहीं करती। भले ही वह प्रतीकात्मक विरोध ही क्यों न हो। यह असभ्यता हिंदी भाषा को सरस्वती पूजा से जोड़कर उसे उत्तर भारत के हिन्दू धर्मावलंबियों की भाषा बना देने का सपना देखती है। उसके अनेक ‘बुद्धिजीवी’ अपने को ही समूचे देश का मालिक समझते हैं और मानकर चलते हैं कि उनके साम्राज्य के सामने सबको झुककर रहना या चलना चाहिए।”<sup>3</sup> इससे स्पष्ट है कि वह न तो बनाई गई एक परिपाटी पर चलने वाले साहित्यकार थे एवं ना ही समाज और साहित्य के ठेकेदारों के पिछलग्गू बनने वाले थे। उन्हें जहाँ गलत लगा उस बात को सच्चाई एवं निर्भीकता से कहा। यह अलग बात है कि इस कारण उन्हें काफी आलोचनाओं का सामना करना

पड़ा। लेकिन एक साहित्यकार की सफलता की पहचान उसकी आलोचनाओं से ही सिद्ध होती है।

मुद्राराक्षस जितना संस्कृत के विद्वान थे उतने ही अंग्रेजी के ज्ञाता। वे प्रकंड विद्वान थे इसमें कोई दो राय नहीं। संस्कृत की तालीम उन्होंने अपने नाना आचार्य चतुरसेन शास्त्री (हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार) एवं बाद में डी.ए.वी कॉलेज के प्रिंसिपल महेन्द्र प्रताप से ली थी। लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य (स्नातकोत्तर) में अध्ययन करने के कारण इन पर पाश्चात्य साहित्यकारों एवं साहित्य का प्रभाव पड़ा। पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन करने के दौरान उन पर मार्क्सवाद और यथार्थवाद का प्रभाव होने लगा एवं उन्हें ये एहसास होने लगा संस्कृत साहित्य यथार्थ से काफी दूर है जिससे उन्हें अपने नाना के विचारों में खोखलापन महसूस होने लगा एवं ये अपने नाना के विचारों के विरोधी बन गए। मुद्राराक्षस को बचपन से ही एक साहित्यिक माहौल मिला जहाँ नाना आचार्य चतुरसेन शास्त्री की वजह से इनका आकर्षण साहित्य की ओर हुआ। वहीं पिता से रंगमंच की प्रेरणा मिली। उनके पिता “उत्तरप्रदेश की लुप्तप्राय प्राचीन लोक-नाट्य परम्परा ‘स्वांग संपेडा’ या ‘नागरसभा’ के एक मात्र जीवित उस्ताद थे।”<sup>4</sup> “उनके पिता शिवचरण लाल उर्दू-फारसी के जानकार ही नहीं थे बल्कि एक बेहतरीन कलाकार और शायर थे। लोक गायन और लोक नाट्य कला में उन्हें उत्तरप्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार के अलावा उस ज़माने में काफी महत्वपूर्ण उपाधियों से नवाज़ा गया था। यही वजह थी कि मुद्राजी को लोककलाओं और संगीत का अद्भुत और गहरा ज्ञान था।”<sup>5</sup> एक सफल साहित्यकार होने के साथ-साथ मुद्राराक्षस एक बेहतरीन चित्रकार एवं मूर्तिकार भी थे। “पुराने टूटे फर्नीचर की लकड़ियों को निकाल कर उन्हें खूबसूरत मूर्तियों के रूप में ढाल देना उनकी खासियत थी। सिर्फ मूर्तियां ही नहीं, ज्यादातर ड्राइंग रूम में रखे बुक शेल्फ उन्होंने खुद ही तैयार किये थे।”<sup>6</sup>

जिस प्रकार यह माना जाता है कि असली गुरु या शिक्षक अच्छी किताबें होती हैं, उसी प्रकार देश भ्रमण करके भी मनुष्य अच्छे ज्ञान को प्राप्त करता है। मुद्राराक्षस पर यह दोनों बातें

सटीक बैठती हैं जहाँ उन्हें बचपन से ही साहित्यिक माहौल मिलने के कारण उन्होंने भारतीय साहित्य (वेदों से लेकर ब्रह्मसूत्र तक, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता जैसे अनेक पौराणिक, धार्मिक ग्रंथों के साथ कालिदास, बाण जैसे कवियों को पढ़ा) से लेकर पाश्चात्य साहित्य (मार्क्स, इलियट, काफ़्का, विलियम कालसि विलियम्स, अस्तित्ववाद, यथार्थवाद आदि) का अध्ययन किया। पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्य पर सूक्ष्म एवं गहन पकड़ होने के साथ उन्होंने अपने ज्ञान में भारत भ्रमण करके उसमें बढ़ोत्तरी की। बचपन से ही घुमक्कड़ प्रवृत्ति का होने के कारण उनके अध्ययनशील स्वभाव को बल मिला। बचपन में जंगलों में घूमने से लेकर नौकरी के दौरान पूरे उत्तर भारत में घूमने तक (चाहे वह स्थानांतरण के कारण रहा हो या आंदोलनों के कारण) इनके व्यक्तित्व एवं ज्ञान को निखारा। जंगलों में घूमने के कारण पेड़-पौधों, जानवरों में इनकी दिलचस्पी दिनों ब दिन बढ़ती गई। जानवरों, पेड़-पौधों के प्रति इनका प्रेम अनोखा था। “एक एक पौधे पर इतनी बारीकी से निगाह रखते कि अगर हमसे कभी छत पर खेलते खेलते एक दो पत्तियां भी टूट जाती तो अगले दिन हमसे पूछा जाता कि पौधे से पत्तियां कैसे गायब हैं?”<sup>7</sup> दिल्ली में मुद्राजी ने अपने घर की छत पर हर किस्म के पौधे लगाए हुए थे जिनमें फ्लोक्स, डॉग फ्लावर, नाइन ओ क्लॉक से लेकर हर तरह के गुलाब, कैक्टस और फल लगे हुए थे। आलम यह था कि नौकरी के दौरान एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण करते समय उनके ट्रक में सामान से ज्यादा पौधे होते थे। वह एक भी पौधा छोड़ कर नहीं जाते थे। पेड़-पौधों के साथ-साथ मुद्राराक्षस को जानवरों से भी गहरा लगाव था। मुद्राजी को केवल बिल्ली और कुत्ते ही नहीं बल्कि किसी भी जीव से बेहद लगाव था। उनका मानना था, “आदमी ज्यादा पाशविक होता है और पशु ज्यादा मानवीय।” भारतीय संस्कृति में उल्लू जैसे जानवर को घर में पालना अच्छा नहीं समझा जाता। लेकिन मुद्राराक्षस ने उल्लू के बच्चे से लेकर गिलहरी के बच्चे तक को अपने घर एवं हृदय में स्थान दिया। “मुद्राजी की वजह से हमारे घर में जानवरों को इतना लाड़ प्यार था कि कभी-कभी हम माँ से कहते-हमसे ज्यादा तो इस घर में जानवरों को प्यार दिया जाता है।”<sup>8</sup> पेड़-पौधों एवं जानवरों के

साथ-साथ वह अपनी गाड़ी (लाल मोटर) के प्रति भी इतने भावुक थे कि बाद में उन्होंने बड़े भारी मन से उसे बेचा। मुद्राजी की एक खास बात यह थी कि उन्होंने कभी किसी भी लग्जरी का इस्तेमाल नहीं किया। लग्जरी के नाम पर बस उन्हें अपनी मोटर से प्रेम था जिसे वह अपनी दूसरी बीवी मानते थे। मोटर से तो प्रेम इस कदर था कि जब वे दिल्ली में आकाशवाणी से इस्तीफा देकर लखनऊ आये तो उनके परिवार ने उन्हें घर में जगह की कमी होने के कारण एवं मोटर पर व्यंग्य होने के कारण (दरअसल मुद्राजी लम्बाई में थोड़े छोटे थे एवं गाड़ी के दरवाजे बड़े और सीट नीची होने के कारण वह कार बिना ड्राइवर के लगती थी) बेचने को कहा तो उन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया। लेकिन करीब तीस साल बाद उन्होंने उसे बेच दिया। कद छोटा होने के बावजूद भी उनके व्यक्तित्व में अलग किस्म का आकर्षण था जो उनके व्यक्तित्व को रौबदार बनाता था।

यूँ तो मुद्राजी छोटी सी उम्र मात्र 17-18 साल से ही लिखने लगे थे। लेकिन उन्हें ख्याति 1952 में प्रयोगवाद पर लिखे गये आलोचनात्मक लेख से मिली। ख्याति के साथ-साथ इन्हें इस लेख से मुद्राराक्षस नाम भी मिला। 1952 से पहले भी मुद्राजी कविताएँ एवं आलोचनात्मक लेख लिखते रहते थे बस फर्क इतना था कि वे इन लेख एवं कविताओं को कहीं छपवाते नहीं थे। वैसे तो बचपन से ही साहित्यिक माहौल मिलने के कारण उन्हें साहित्य में रुचि थी। बचपन में मुद्राराक्षस निराला एवं महादेवी से इतने प्रभावित थे कि इन्होंने महादेवी वर्मा की साहित्य संसद की तर्ज पर बाल साहित्यकार संसद बनाई, “वह 11वीं में रहे होंगे जब एक बार उन्होंने अपने कुछ स्कूली मित्रों के साथ मिल कर महादेवी वर्मा की साहित्य संसद की तर्ज पर बाल साहित्यकार संसद बनाई। इस संसद की ओर से हाथ से लिखा करीब चार सौ पृष्ठ का एक महादेवी अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार किया। मुद्राजी इस ग्रन्थ को लेकर अपने एक मित्र के साथ महादेवी वर्मा के घर इलाहाबाद पहुँच गए। इस ग्रन्थ को देख कर महादेवी वर्मा को बड़ा आश्चर्य हुआ।”<sup>9</sup> चार सौ पृष्ठ का ग्रन्थ लिख कर स्वयं तैयार करना दर्शाता है कि मुद्राराक्षस बचपन से ही साहित्य प्रेमी होने के साथ-साथ मेहनती भी थे। निचले स्तर के गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण वह यह तो समझ



चुके थे कि ऊँचे मुकाम तक पहुँचने में परिस्थितियाँ आसान नहीं होने वाली है, लेकिन गरीबी को उन्होंने कभी कमजोरी नहीं बनाया बल्कि ढाल बना कर अपना मुकाम हासिल किया। लेखन कार्य के माध्यम से अपने जीवन स्तर को उठाया। गरीब होने के कारण वह चाहे खुद बचपन में कटु अनुभवों से परिचित हुए हो लेकिन उन्होंने अपने बच्चों एवं पत्नी को इन कटु अनुभवों का एहसास नहीं होने दिया। वह स्वयं चाहे लखनऊ के छोटे से सोहन लाल मुरारी पाठशाला में पढ़े हो लेकिन अपने बच्चों की शिक्षा उन्होंने कॉन्वेंट स्कूल (जे डी टाइटलर स्कूल करोल बाग) से कारवाई। यहाँ यह स्पष्ट करना भी जरूरी है कि इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे कॉन्वेंट के पक्षधर थे। “माँ इंदिरा जी का शौक था हमें कॉन्वेंट में ही पढ़ाया जाये, जबकि मुद्राजी ये कहने में बिल्कुल गुरेज नहीं करते थे कि मैं तो मुरारी पाठशाला में पढ़ा हूँ, कॉन्वेंट में पढ़ना जरूरी नहीं होता।”<sup>10</sup> सही मायने में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए करने के पश्चात मुद्राराक्षस ने साहित्यिक जीवन का आरम्भ किया। सन् 1953 में कलकत्ता की ‘ज्ञानोदय’ पत्रिका में लेख लिखकर पत्रकारिता के माध्यम से साहित्यिक जीवन की शुरुआत की। बाद में संपादन कार्य भी करने लगे। सन् 1966 में अपना पहला नाटक ‘मरजीवा’ लिखा। फिर तो यह सिलसिला नाटक से लेकर कहानियों तक चलता रहा। उपन्यास, व्यंग्य, नाटक, निबंध, कहानियों तक यह सिलसिला चलता रहा। मुद्राराक्षस मूल रूप से नाटककार, व्यंग्यकार एवं कवि थे। नाटक एवं व्यंग्य के क्षेत्र में इन्हें ख्याति प्राप्त हुई। कहानी लेखन के गुरु तो इन्होंने अमृतलाल नागर से सीखे थे। “इन्होंने नागर जी से कहा-मुझे कहानी लिखना नहीं आता। इस पर नागर जी ने समझाया सीख जाओगे। आज तुम कुछ घंटे अमीनाबाद के बजार में घूमों और लोगों की आँखें देखो। जितनी तरह की आँखें देखो उनका एक दो तीन चार पंक्तियों में विवरण लिख कर दिखाओ। मुद्राजी बताते थे की कथा लेखन का इतना कारगर और प्रभावशाली शिक्षण मैं नहीं जानता कोई दूसरा कथाकार दे सकता है।”<sup>11</sup> इस प्रकार अच्छे कवि, व्यंग्यकार एवं नाटककार के साथ-साथ उन्होंने सफल कहानीकारों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। व्यंग्यकार के रूप में तो मुद्राराक्षस की ऐसी पहचान थी कि इनके

व्यंग्य रचनाओं से राजनैतिक एवं आलोचना जगत में हलचल मच जाती थी। इनका 'मथुरादास की डायरी' व्यंग्य रचना तो इतनी विस्फोटक रही कि विरोधी लोगों ने इसकी श्रृंखला ही बंद करवा दी। राक्षस उवाच, धर्मग्रंथों का पुनर्पाठ नामक रचनाओं से तो उनका इतना विरोध हुआ की विरोधियों ने इनके घर पर पथराव तक किये एवं धर्माधियों से तो उन्हें धमकियां तक मिलने लगी। मुद्राराक्षस का मानना था कि लेखक कितने ही नेक इरादों से हो, अगर झूठ बोलता है तो वह इतिहास के साथ विश्वासघात करता है। लेखक को सच बोलना ही होगा और सच बोलने के खतरे भी उठाने होंगे। मुद्राराक्षस एक विवेकपूर्ण व्यंग्यकार थे उनकी रचनाओं को पढ़कर लगता है कि उन्हें इतिहास, राजनीति, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र की गहरी परख थी। अपनी अन्य रचनाओं की अपेक्षा मुद्राराक्षस अपने नाटकों एवं व्यंग्यों के कारण अधिक चर्चा का विषय रहते थे। अपने संघर्षशील, निडर एवं रौबदार व्यक्तित्व के कारण वे अपने ऊपर होने वाली आलोचनाओं से कभी डरे नहीं बल्कि समाज के कूपमण्डूकों पर अपने विवेकपूर्ण व्यंग्यों के माध्यम से निरंतर प्रहार करते रहे।

निडरता तो उनके व्यक्तित्व की ऐसी विशेषता थी जिसके कारण उन्होंने कभी भी समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं अंधविश्वासों से समझौता नहीं किया एवं अपनी व्यंग्य रचनाओं और साहित्य के माध्यम से उसका निरंतर विरोध करते रहे। राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक भर्त्सनाओं का विरोध करने के कारण उन्हें कई बार नक्सली भी समझ लिया गया। "कॉफ़ी हाउस में एक व्यक्ति, जो मुद्रा जी पर कई दिनों से नज़र रखे था, भी आकर आस-पास की टेबल पर बैठ जाता। मुद्राजी समझ चुके थे कि उनका पीछा किया जा रहा है। दरअसल वो कोई सी.बी.आई का इंस्पेक्टर था जिसे मुद्राजी के पीछे सरकार ने ये जानने के लिए लगाया था कि कहीं मुद्राजी नक्सलियों के साथ तो नहीं? एक दिन मुद्राजी ने उसे बैठा देख बुलवाया और उसे बता दिया कि वह समझ चुके हैं कि उनका पीछा किया जा रहा है। मुद्राजी का स्वभाव इतना मधुर था कि कुछ समय में वह भी उनका कायल हो गया।"<sup>12</sup> यह उन दिनों की घटना है जब मुद्राराक्षस आल

इंडिया रेडियो में काम किया करते थे। आल इंडिया रेडियो में काम करने से पूर्व वे कलकत्ता में पत्रकारिता का काम करते थे। 1958 में 'ज्ञानोदय' से इस्तीफा देने के बाद दिल्ली में बस गए। मुद्राराक्षस एवं विवादों का ऐसा संबंध था कि ना चाहते हुए भी वे विवादों में पड़ जाते थे। उन्हीं के शब्दों में "मैं खुद तो विवादों से बचता हूँ लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं जो विवादास्पद हो जाती हैं।" 1962 में उन्हें जब आल इंडिया रेडियो नई दिल्ली से नौकरी का आमंत्रण मिला उस समय वहाँ के कर्मचारियों की हालत कुछ सही स्थिति में नहीं थी अर्थात् बदतर थी। कर्मचारियों का मेहनताना उनकी मेहनत के मुनासिब नहीं था और न ही उनकी नौकरी के स्थाई होने की उम्मीद थी। ऐसे समय में उन्होंने ब्राडकास्टिंग का प्रस्ताव स्वीकार किया। मजदूरों की बद से बदतर हालत देखकर 1968 में आकाशवाणी कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष बने। मजदूरों की ट्रेड यूनियन बनाकर उनके अधिकारों को एक नई दिशा एवं उर्जा दी। इस ट्रेड यूनियन का नेतृत्व उन्होंने स्वयं करते हुए इस अन्याय का कड़ा विरोध किया। देश की जनता द्वारा इस आंदोलन को काफी सराहा गया। मुद्राराक्षस के इस आन्दोलन की चिंगारी भारतीय जनता पर देखते हुए इसकी चर्चा लोकसभा में की गई एवं उनकी मांगों को मानते हुए सरकार ने कर्मचारियों की तनखाह प्रति महीना एक सौ पचास रुपये बढ़ाने के साथ-साथ कर्मचारियों को स्थायी भी किया। इससे कर्मचारियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ। "वह चतुर्थ श्रेणी, कर्मचारियों, कलाकारों, लिपिकों व तकनीकी कर्मचारियों के लिए व्यवस्था और सरकार से भी भिड़ने को तैयार रहते। उन पर मार्क्सवाद का खासा प्रभाव था। वह मार्क्सवाद से स्टूडेंट फेडरेशन के माध्यम से ही जुड़ गए थे। उन्होंने जुलूस, धरना, हड़ताल, प्रदर्शन आदि में भरपूर भाग लिया। मुद्राजी के प्रयासों से उन दिनों आकाशवाणी और दूरदर्शन में एक मजबूत ट्रेड यूनियन संगठित हो चुकी थी जो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बद्ध थी। उस समय के कबीना मंत्री सत्यनारायण सिन्हा मुद्राजी को नक्सलवादी कहकर व्यंग्य करते थे लेकिन इंद्रकुमार गुजराल, जो उस समय केंद्र सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में राज्यमंत्री बन चुके थे, इस व्यंग्य का प्रतिवाद करते

थे।”<sup>13</sup> शायद इंद्रकुमार गुजराल ये समझते होंगे कि कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़े होने का मतलब नक्सली होना नहीं है। आल इंडिया रेडियो से इस्तीफा देना भी कम विवादास्पद नहीं रहा है। सन् 1976 में आपातकाल के समय एक घटना ऐसी घटी जिसने मुद्राराक्षस को हिला कर रख दिया। इस समय सूचना मंत्रालय में गुजराल जी के स्थान पर विद्याचरण शुक्ल नियुक्त हो गये थे। जिन्होंने आकाशवाणी कर्मचारियों के लिए नियम बनाया कि सुबह दस बजे दफ्तर आयें और उन्होंने हुक्म दिया जो लोग दस बजे के बाद पहुँचे, उन्हें अन्दर न आने दिया जाए और उन्हें अनुपस्थित दिखाया जाए। यह उन के लिए सही था जो दस बजे आते और पाँच बजे चले जाते पर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, तकनीकी कर्मचारी और कलाकार या तो अपनी शिफ्ट के मुताबिक आते थे या फिर अपने काम के अनुसार। वे सभी परेशान थे क्योंकि उनका एक दिन का वेतन कटना था। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के लिए एक दिन का वेतन कटना सिर्फ एक दिन का वेतन कटना नहीं होता है। वह उसके पूरे जीवन का नुकसान होता है। जिसकी भरपाई वह ताउम्र भी नहीं कर पाता। मुद्राराक्षस आल इंडिया में पहले टिप्पणीकार बने, फिर सलाहकार, निरूपक और बाद में नाटकों का निर्देशन भी करते रहे। इस नियम के अनुसार दोपहर एक बजे से रात दस बजे तक काम करनेवालों को सुबह दस बजे आने में परेशानी हो रही थी। मुद्राराक्षस ने इसका कड़ा विरोध किया एवं विद्याचरण शुक्ल को यह नियम वापस लेने को कहा। यहाँ एक वाक्या का जिक्र मुद्राराक्षस के शब्दों में ही करना समीचीन होगा, “जब मैं अन्दर पहुँचा तो मैंने देखा बायीं तरफ के लम्बे सोफे पर एक भरा-पूरा, समूचा, जिन्दा शेर बैठा हमें तक रहा है। वह बंधा नहीं था पर उसने हम पर हमला नहीं किया। सत्ता के दर्प और शक्ति की उस जिन्दा निशानी को देख कर मैंने महसूस किया जैसे मेरी उम्र के लगभग दौ सौ बरस यकायक किसी ने छीन लिये और मैं उस जमाने में खड़ा रह गया जब महाराजा या गवर्नर शेर या चिता लेकर शेर की नक्काशी वाले सिंहासनों पर बैठते थे और भूखे शेर के ज़रिये चीरे जाते इंसान को देखकर खुश होते थे, हँसते थे।”<sup>14</sup> विद्याचरण शुक्ल यह तो मान गये कि शिफ्टों में काम करने वाले लोग हैं, उन्हें शिफ्टों में आने दिया जायेगा पर पैसे न कटने

की बात पर वह राजी नहीं हुए। इस बात पर दोनों में झगड़ा हुआ। जिससे कर्मचारी मंत्री का विरोध करने लगे। तब पुलिस आ गई और मुद्राराक्षस को कारावास भी हुआ। इस पूरे मामले पर नेशनल हेराल्ड के एक पत्रकार ने कहा अब तक हम नागरिक थे और अब प्रजा हो गये हैं। कुछ दिन केस चला और केस खत्म होते होते आपातकाल का असली चेहरा सामने आया। इसी माहौल में एक दिन मुद्राराक्षस को पता चला कि उनका तबादला इंदौर ब्राडकास्टिंग कर दिया गया है। “ये कैसे हो सकता है? मैंने आश्चर्य से कहा मैं जानता था कि पिछले कुछ बरसों में बहुत से अधिकारियों के तबादले मैंने कराए थे और बहुतों के तबादले रुकवाए भी थे। तब मेरा तबादला कौन और कैसे कर सकता था?”<sup>15</sup> अतः इतना सब होने के बाद दुबारा इसी संस्था के साथ नौकरी करना मुद्राराक्षस ने उचित नहीं समझा एवं आल इंडिया रेडियो से इस्तीफा दे दिया। लेकिन, उनका इस्तीफा मंजूर नहीं किया गया। मार्च 1976 में दिया हुआ इस्तीफा आखिर जून के अंत में स्वीकार हुआ। फिर वह दिल्ली छोड़ कर लखनऊ आ गए एवं स्वतंत्र रूप में लेखन का कार्य करने लगे।

स्वतंत्र रूप में लेखन करते हुए उन्होंने अनेक उपन्यास, नाटक, व्यंग्य, कहानियाँ, निबंध आदि लिखे। वे दिन ब दिन सफल रचनाकार के रूप में उभरे। उनके साहित्य में पूंजीपतियों का विरोध, मार्क्सवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, मानवतावाद, वर्गविभेद का विरोध, यौन समस्याओं का प्रभाव दिखता है। कुछ आलोचकों ने मुद्राराक्षस पर भी आरोप लगाया है कि उनकी रचनाओं में सेक्स संबंधी संवाद खुलकर होने की प्रधानता है। लेकिन सेक्स उनके यहाँ मूल कथ्य नहीं है वह स्थिति के अनुसार रूप ग्रहण करता है। यह सच है कि सेक्स के बिना वह जीवन को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। मुद्राराक्षस के यहाँ खुलापन है इसी कारण आवश्यकतावश सेक्स का चित्रण हुआ है। मुद्राराक्षस अपने नाटक योर्स फैथफुली की भूमिका में लिखते हैं, “अंदर से देखने पर स्पष्ट हो सकेगा कि इस नाटक में सेक्स स्वयं एक वक्तव्य है, वह पराजित मन का ऐसा अवशिष्ट जीवन तंतु है जिसमें पात्रों की समझ को बीमार कर दिया है। जिन पात्रों ने सभी हथियार डाल दिए हैं या विवश निहत्था कर दिया गया है वे अगर जनेंद्रिय में ही अपनी जिजीविषा खोजी तो आश्चर्य क्या

है ?”<sup>16</sup> वातावरण के अनुसार परिस्थिति को खुलकर व्यक्त करने मात्र से किसी रचनाकार की नैतिकता पर प्रश्न खड़ा नहीं किया जा सकता। इस बात पर भी गौर करना चाहिए कि अश्लील शब्द किस प्रकार हमारे जीवन का अंग बने रहते हैं कि हमारा ध्यान भी नहीं जाता है। वही जीवन का अंग फिर लिख देने मात्र से अश्लील कैसे हो सकता है?

मुद्राजी जहाँ विचारों में मार्क्सवादी थे वही लेखन में वे इलियट और काफ़का की ओर आकर्षित थे। धीरे-धीरे उनके साहित्य पर भी मार्क्सवाद एवं यथार्थवाद का प्रभाव बढ़ने लगा। इनका साहित्य अनिवार्यतः सोदेश्य है, एवं उसके उद्देश्य निश्चित है-सर्वहारा वर्ग को क्रांति के लिए तैयार करना, शोषक वर्ग के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना तथा कुल मिलकर समाजवाद तथा साम्यवाद की स्थापना में सक्रिय भूमिका देना। मुद्राराक्षस ने अपने जीवन में वर्ग वैषम्य के नरक को झेला था। इस नरक के आधार पर ही उन्होंने उपन्यास लिखा-‘नारकीय’ जिसकी भूमिका में लिखते हैं, “समृद्ध समाज जिन लोगों के जीवन को, हर्बर्ट माक्यूस के शब्दों में, नरक बनाता है और जो इस नरक से बाहर आने के लिए संस्कृति और साहित्य की नसेनी का सफल या असफल इस्तेमाल करते हैं, यह उपन्यास कमोबेश उनकी पड़ताल की एक कोशिश है। यह उन लोगों को पहचानने का एक प्रयत्न भी है जो इस नरक को ध्वस्त करने के लिए साहित्य और संस्कृति को अपना औजार बनाते हैं। यह उपन्यास उन्हें भी परखने का एक उपक्रम है जो नरक से मुक्ति की क्रीम पर अपने सहजीवियों की मुखबिरी करते हैं। पर कुछ ऐसे भी होते हैं जो यह सब नहीं करते। बस, नरक को और ज्यादा नारकीय बनाते हैं।”<sup>17</sup> इनकी दृष्टि शोषितों की समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से देखने में पूरी ईमानदारी से सक्रिय रही है। साथ ही वह यह मानते हैं कि मजदूर, कृषक, दलित, शोषित आदि के पक्ष में लिखे होने से ही कोई रचना साहित्य नहीं होता। उसे रचने की मौलिक शर्तें पूरी करनी होती हैं। यही कारण है कि रचनात्मक लेखन अलग होता है और सफल लेखन अलग। मुद्राराक्षस सफल नाटककार होने के साथ-साथ सफल निर्देशक भी थे। लेकिन उनका यह भी मानना था कि लेखक को स्वयं अपना नाटक नहीं करना चाहिए क्योंकि

नाटक का सबसे खराब निर्देशक वह स्वयं होता है। 'मरजीवा' मुद्राजी का आरंभिक नाटक है जिसका प्रदर्शन 1966 में मुद्राजी ने स्वयं किया। मरजीवा नाम नागार्जुन द्वारा दिया गया था। नाटकों से मुद्राराक्षस नेमिचंद्र जैन की वजह से जुड़े थे और सफल नाटककार के रूप में ख्याति प्राप्त की। लेकिन, नेमिचंद्र जैन मानते थे संगठनों, संघपरिवारों, सामाजिक आंदोलनों में संलग्न रहने से वे अपने साहित्य को समय नहीं दे पायेंगे। परन्तु उनके अनुसार जो सत्य उन्हें मजदूर आंदोलन से मिला उसने ही उनके लेखन को भाषा दी। मुद्राराक्षस ने नाटककार के रूप में खूब ख्याति बटोरी एवं अनेक नाटकों की रचना की जिसमें मरजीवा, संतोला, तिलचिट्टा, योर्स फैथफुली, आला अफसर और तेंदुआ शामिल है। 'आला अफसर' तो हिंदी में व्यापक लोकप्रियता और स्तरीय रचनात्मकता का अद्भुत उदाहरण है। इसकी लोकप्रियता अभूतपूर्व है जिसने भारत के हर कोने के रंगकर्मीयों और दर्शकों को आकर्षित किया। यह नाटक भ्रष्ट नौकरशाही के विकृत रूप एवं उसका प्रभाव एक मजलूम पर किस हद तक पड़ सकता है, इसका जीता-जागता प्रमाण है। यह नाटक गोगोल का सुप्रसिद्ध नाटक 'थे गवर्नमेंट इंस्पेक्टर' का अनुवाद है, जिसे मुद्राराक्षस ने हिन्दुस्तानी नौटंकी का रूप दिया है। इसके भारत की अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुए और उन्होंने भी दर्शकों को आकर्षित किया। भारतीय रंगमंच के विदेशी अध्येताओं ने इसे एक गहरे आश्चर्य से देखा और विदेशी पुस्तकों में विस्तार से इस नाटक की चर्चा हुई। इस क्रम में यू.एस की वर्जीनिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर राबर्ट हक्सटैड ने मुसहर जाति पर लिखा गया उपन्यास 'दंड-विधान' 'The Hunted' नाम से अंग्रेजी में अनुवादित किया। मुद्राराक्षस की अनूदित कृतियों में सबसे अधिक प्रसिद्धि आला अफसर ने पाई है। सबसे लम्बी अवधि तक इस नाटक की प्रस्तुतियां मुंबई जैसी व्यावसायिक रंगमंच की नगरी में हुईं। 70 का दशक नाटक के क्षेत्र में हबीब तनवीर, ब.व.कारंत, जब्बार पटेल और रतन थियम जैसे दिग्गजों के प्रभावशाली प्रयोगों का दौर था। कुछ अन्य कलाकार जो मुद्राजी के साथ नाटकों से जुड़े हुए थे उनमें नसीरुद्दीन शाह, कुलभूषण खरबंदा और ओम पुरी आदि विशेष नाम हैं जो बाद में मुंबई

चले गए। अस्सी के दशक में हिंदी नाटक लेखन की स्थिति काफी दुखद होने लगी थी। अहिन्दी भाषी रंगकर्मियों ने कविता, कहानी, उपन्यास का मंचन प्रारंभ कर दिया। ये कोई प्रयोग नहीं था बल्कि हिंदी नाटकों पर काम करने वाले लेखकों की रॉयल्टी से बचने का एक तरीका था। हैरान करने वाली बात ये थी कि इस स्थिति का रंग समीक्षकों ने भी समर्थन किया। सरकारी अनुदान से होने वाले नाटकों में भी लेखक की रॉयल्टी को नज़रअंदाज़ किया जाने लगा। यहाँ तक की अहिन्दी भाषी रंग-निर्देशकों ने लेखक को उसके नाटक के प्रदर्शन की सूचना देना भी उचित नहीं समझा। निर्देशक ही लेखक भी बन गया। वह किसी भी आलेख को उठाकर उस पर आधारित अपना नाटक लिखने लगा। इस स्थिति पर किसी भी हिंदी समीक्षक ने कोई टिप्पणी नहीं की। इस स्थिति से खिन्न होकर मुद्राजी ने नाटक कभी ना लिखने का फैसला किया। ऐसा केवल उन्होंने ही नहीं किया बल्कि उस वक़्त के कई अफसर और लेखकों ने भी नाटक लिखना बन्द कर दिया। इस विषय में आला अफसर की भूमिका में लेखक लिखते हैं, “राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एक ऐसी फैशनपरस्त संस्था है जो न तो नाटक की गहरी समझ देती है और न ही सामाजिक विवेक की। वह छंद और अलंकार सिखाकर कवि पैदा करने की कोशिश करती है। उसका ख्याल है कि छात्र पढ़कर रचनाधर्मी होता है। कभी विश्वविद्यालयों के कला-निकायों का भी यहीं मुगालता हुआ करता था। बाद में इसका भेद खुल गया। जिस तरह साहित्य में एम.ए. पढ़कर कोई साहित्यकार नहीं होता, उसी तरह नाट्य विद्यालय का स्नातक होकर भी रंग-रचनाकार नहीं हुआ जाता।”<sup>18</sup>

मुद्राराक्षस अपने साहित्य की दुनिया में जितने लेखन के प्रति ईमानदार, आक्रामक और तेज़ थे, वहीं परिवार, मित्रों के लिए उतने ही भावुक। अपने मित्रों गौरी शंकर कपूर, बीर राजा, श्रीलाल शुक्ल (जिनके साथ उनके अनेको मतभेद रहे पर मनभेद कभी नहीं रहा), राजेन्द्र यादव, कुबेर दत्त, डॉ. कांता पन्त, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, रमाकांत, गौरीशंकर कपूर और रघुवीर के चले जाने के बाद इतने विचलित, परेशान और अकेले पड़ गये कि धीरे-धीरे लिखना भी कम हो गया। वे लिखते हैं कभी कभी जो कुछ चला जाता है उसके बारे में सोचना भी इतना तकलीफ देह होता



है कि उधर देखने की हिम्मत बटोर पाना मुश्किल होता है। 2013 में राजेंद्र यादव के जाने के बाद तो वे इतने टूट गये कि उन्होंने अपनी पत्नी इंदिरा से कहा कि मेरे सारे दोस्त चले गए मैं ही रह गया। उनके लिए यह सब बहुत ही कष्टदायक था।

उनके साहित्यिक एवं सांसारिक जीवन में बहुत से लोगों ने उनका साथ दिया तो बहुत से लोगों ने उनका साथ बीच में ही छोड़ दिया। मुद्राराक्षस का साथ देने का मतलब था सत्ता और व्यवस्था से सीधे टकराना। सत्ता और व्यवस्था से सीधे टकराने के कारण ही उन्हें आकाशवाणी से नौकरी छोड़नी पड़ी, प्रेमचंद पर लिखी टिप्पणी के कारण ही उन्हें आकाशवाणी से नौकरी छोड़नी पड़ी, प्रेमचंद पर लिखी टिप्पणी के कारण मुद्राराक्षस को प्रगतिशील लेखक से प्रतिबंधित कर दिया गया क्योंकि प्रेमचंद तर्क का विषय न होकर साहित्यिक दुनिया में श्रद्धा के विषय हैं जिनके विरुद्ध बोलकर कोई मनुष्य देशद्रोह के समान अपराध कर देता है। यही अपराध करने की हिमाकत मुद्राराक्षस ने की थी। कुछ लेखकों ने उनका खुलकर विरोध न करकर नज़रअंदाज करना शुरू कर दिया था। मुद्राराक्षस इन घटनाओं से निराश अवश्य हुए लेकिन विचलित नहीं हुए। मुद्राराक्षस राजनैतिक एवं साहित्यिक दुनिया में खलबली मचाने वाले ऐसे लेखक थे जिन्हें सरकार की तरफ से कई बार लुभावने अवसर मिले। लेकिन, वह तो सत्य को लिखने एवं जीने वाले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने 'शब्द और कर्म' की एकता को कायम करते हुए अपने जीवन का मार्ग स्वयं निर्धारित किया। अगर उन्होंने ऐसा न किया होता और लुभावने अवसरों का फायदा उठाया होता तो आज मुद्राराक्षस, मुद्राराक्षस न होकर केवल गुमनाम सुभाषचंद्र गुप्ता होते। भानु भारती जो रंगमंच दुनिया के मशहूर हस्ती हैं उन्होंने मुद्राराक्षस की स्मृति में लिखा, "Mudrarakshas was essentially unconventional and bold in his selection of themes at a time when hindi writing was conservative and inhibiting. He experimented with themes which were not attempted by his contemporaries"<sup>19</sup> साहित्य की दुनिया में मुद्राराक्षस को बेबाकी से अपनी बात कहने वाला

योद्धा माना जाता है। नेहरू से लेकर मोदी तक की व्यवस्था पर सवाल उठाये। विद्रोह का यह विराट हस्ताक्षर इस दुनिया पर अपने बेबाकीपन, राजनैतिक एवं सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध स्वर को प्रबल करने की दिशा देते हुए 13 जून 2016 को रुखसत हो गए। यह निश्चित है जब-जब समय बिगड़ेगा, मुद्राराक्षस की याद आयेगी। उन्हीं के शब्दों में 'यह ऐतिहासिक पाप होगा, अगर हम चुप रहे। बदलाव का इतिहास रचने के लिए लड़ाई में उतरना जरूरी है। हमें इसलिए लिखना है ताकि जो लड़ रहे हैं, उनका भरोसा न टूटे।' यही कारण है कि साहित्य और साहित्यकार की समझ रखने वाले लोग उन्हें बुद्ध, कबीर और गालिब के बराबर दर्जा देते रहे हैं।

## 1.2 मुद्राराक्षस की रचनाएँ :

मुद्राराक्षस ने 'शब्द और कर्म' को एक ही मानते हुए साहित्य का सृजन किया। इनके साहित्य का कथानक इनके जीवन में घटने वाली घटनाओं से ही प्रेरित है। मुद्राराक्षस सफल नाटककार, व्यंग्यकार के साथ-साथ सफल कहानीकार, उपन्यासकार, संपादक के रूप में भी जाने जाते हैं। इन्होंने अपने साहित्य का आरम्भ कवि एवं आलोचक के रूप में किया। ये अलग बात है कि इन्होंने अपनी आरंभिक कविताओं एवं आलोचनाओं को छपवाया नहीं। मुद्राराक्षस का व्यक्तित्व अपने में अनोखा है। जिन्हें पैदल यात्रा का शौक लेकिन ट्रेन यात्रा, टेलीफोन और पत्र लेखन से घबराहटा। पेड़-पौधों, पशुप्राणियों को पालने का शौक। या तो घोर एकांत प्रिय या भीड़ प्रिय। फॉसिल के संग्रह का शौक और पुस्तकालय न जा कर जरूरत की किताबों का अपना विशाल संग्रह। इनके व्यक्तित्व के अनुरूप ही इनका रचना संसार है।

**नाटक :** मरजीवा, तेंदुआ, तिलचट्टा, योर्स फैथफुली, आला अफसर, मरजीवा, गुफाएँ, संतोला, रंगभूमिकाएं, डाकू, गिनीपिग।

**उपन्यास** : लिबिड़ो, मैडेलीन, मकबरा, अचला एक मनःस्थिति, शांति भंग, भगोड़ा, हम सब मंसाराम, नारकीय, दंडविधान, अर्धवृत्त, हस्तक्षेप, शोक संवाद, शब्द दंश, मेरा नाम तेरा नाम, ग्यारह सपनों का देश ।

**कहानी संग्रह** : प्रतिहिंसा तथा अन्य कहानियाँ, 21 श्रेष्ठ कहानियाँ, 10 प्रतिनिधि कहानियाँ, मुद्राराक्षस संकलित कहानियाँ, श्रेष्ठ दलित कहानियाँ (संपादन) ।

**हास्य व्यंग्य** : मथुरादास की डायरी, राक्षस उवाच, प्रपंच तंत्र, सुनो भाई साधो ।

**अंग्रेजी साहित्य** : The hunted, Re-reading Jesus

**समीक्षा, निबंध, आलोचना, संस्मरण** : धर्मग्रंथों का पुनर्पाठ; मुद्राराक्षस सृजन एवं संदर्भ; भारतीय अर्थतंत्र निशाने पर; बहस चौराहे पर; समाज, संस्कृति और राजनैतिक सत्ता; बीच बहस में-स्त्री, दलित और जातीय दंश; आलोचना और रचना की उलझने; आलोचना का समाजशास्त्र; कालातीत (संस्मरण); भगत सिंह होने का मतलब; नेमिचन्द्र जैन; धर्म बनाम अंधविश्वास; भारतीय संस्कृति और वामपंथ; साहित्य-समीक्षा परिभाषाएं और समस्याएं ।

**बाल साहित्य** : चिंटीपुरम के भूरेलाल; सरला बिल्लू और जाला ।

**संपादन** : ज्ञानोदय, अनुव्रत, छायाण्ट, बेहतर, आकाशवाणी नाटकों का सम्पादन ।

**फेलोशिप** : उत्तर प्रदेश के लोक संगीत रूपक जीवन सिंह के स्वांग के पुनरुज्जीवन, नवीनीकरण एवं प्रस्तुति के लिए केंद्रीय सरकार के सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय की सीनियर फेलोशिप ।

**उपाधियाँ** : अवध रत्न शुद्राचार्य, लोक नाट्य शिरोमणि, कमर कहकशा, दलित रत्न ।

**पुरस्कार** : साहित्य भूषण, कैफी आजमी अवार्ड, केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी, राष्ट्रीय पुरस्कार, सर्वोदय साहित्य सम्मान, संगीत नाटक अकादमी रत्न सदस्यता अवार्ड, कल्चरल रिवाल्व्यूशन अवार्ड, दलित रत्न, अकादमी रत्न, अम्बेडकर इंडिया सम्मान, अवध रत्न, नाट्य शिरोमणि। मुद्रा जी ने एक पाब्लो नरूदा सम्मान नाम से पुरस्कार भी शुरू किया ।

संक्षेप में, मुद्राराक्षस भारतीय, पाश्चात्य साहित्य के साथ-साथ राजनीति, इतिहास, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र के भी गहरे पारखी थे। इनका लेखन गैर-पारम्परिक, अनोखा और अपनी तरह का अनूठा है। उन्होंने अपना रास्ता स्वयं बनाया और किसी भी परम्परा और शैली का अनुगमन नहीं किया। वे अकेले ऐसे लेखक थे, जिनके सामाजिक सरोकारों के लिए उन्हें जन संगठनों द्वारा सिक्कों से तोलकर सम्मानित किया गया। उनका संघर्ष केवल लेखन में नहीं था, जीवन व्यवहार में भी वह लगातार उन बुराइयों के खिलाफ लड़ते रहे जो भारतीय समाज को विभिन्न धड़ों में बांटती है। एक जाबांज योद्धा के जैसे उन्होंने कलम को पूरी ताकत से इस्तेमाल किया।

## संदर्भ

1. मुद्राराक्षस; आला अफसर; राधाकृष्ण प्रकाशन, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002; संस्करण: 2017; पृ.23
2. मुद्राराक्षस; नारकीय; वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002; संस्करण: 2009; पृ.35
3. सिंह, कृष्ण प्रताप; तर्क, विवेक, विज्ञानबोध और मुद्राराक्षस; बहुवचन (सं. अशोक मिश्र); महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; संस्करण: जनवरी-मार्च, 2017; पृ.26
4. मुद्राराक्षस; आला अफसर; राधाकृष्ण प्रकाशन, 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002; संस्करण: 2017; पृ.10
5. मुद्राराक्षस, रोमेल; मुद्राराक्षस साहित्य वीथिका; मुद्राराक्षस हिन्दी साहित्य फाउंडेशन, 2016, सोलितेयर टावर, पैरामाउंट सिम्फनी, क्रासिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश; संस्करण: 2017; पृ.18
6. वही; पृ.18
7. वही; पृ.34
8. वही; पृ.40
9. वही; पृ.41
10. वही; पृ.10
11. वही; पृ.44
12. वही; पृ.28
13. वही; पृ.46
14. मुद्राराक्षस; नारकीय; वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002; संस्करण: 2009; पृ.221
15. वही; पृ.228
16. मुद्राराक्षस; योर्स फैथफुली; वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002; संस्करण: 2009; भूमिका
17. मुद्राराक्षस; नारकीय; वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002; संस्करण: 2009; पूर्व वृतान्तक

18. मुद्राराक्षस; आला अफसर; राधाकृष्ण प्रकाशन, 7/31,अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002; संस्करण: 2017; पृ.17
19. <http://www.thehindu.com/features/friday-review/He-took-on-hypocrisy/article14425993.ece> Date: 24.05.2018